International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 17-06-2022, Accepted: 03-07-2022, Published: 20-07-2022
Volume 4, Issue 2, 2022, Page No. 1-4

131 महादेवी–वर्मा के चिंतन में राष्ट्र

सुमन
अतिथि शिक्षक, सीवीएस, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सांराश
किसी भी साहित्य पर तदयुगीन समाज की राजनीतिक,आर्थिक,सामाजिक परिस्तिथियों का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक होता है। 19वी सदी के उतरार्द्ध में भारत पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ है। तत्कालीन समाज का अधिकतर साहित्य राष्ट्रीयता की भावना से ओत प्रोत रहा है। छायावाद की पृष्ठभूमि भी राष्ट्रीयता की रही है। महादेवी वर्मा छायावाद की महत्वपूर्ण कवयित्री रही है। उनका साहित्य भी राष्ट्रीयता को समेटे हुए Gsa

मूल शब्दः राष्ट्र, राष्टीयता, छायावाद

प्रस्तावना
किसी भी साहित्य पर उस सनम की तद्युगीन सामाजिक, राजनीतिक सांस्कृतिक, परिस्थितियों का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारत पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ है। उस समय भारतीय समाज अंग्रेजी शासन के अत्याचारों से पीड़ित था। तत्कालीन समाज का अधिकतर साहित्य शब्दहीनता की भावना से ओत–प्रोत रहा। छायावाद की पृष्ठभूमि भी स्वतंत्राता आंदोलन की रही है। तत्कालीन परिस्थितियों का प्रभाव छायावाद के साहित्य पर भी पड़ा। महादेवी वर्मा छायावाद की महत्वपूर्ण कवयित्राी है। उस समय की सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक परिस्थितियों का प्रभाव महादेवी वर्मा के काव्य पर भी पड़ा।
उन्नीसवीं सदी का भारत राजनीतिक इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। सन् 1757 के प्लासी युद्ध के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी के द्वारा भारत में अंग्रेजी राज की शुरूआत हो चुकी थी। 19वीं सदी के प्रारंभ तक सम्पूर्ण भारत गुलामी की जंजीरो में लकड़ा जा चुका था। लेकिन ऐसा नहीं था। कि भारत ने बड़ी आसानी से अंग्रेजी शासन अपना लिया था। बल्कि समय–समय पर अंग्रेजो को चुनौतियों भी देते रहे। इस दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण घटना 1857 ई. से पहले भी अनेक विद्रोह हुए जिनका मुख्य उद्देश्य अंग्रेजों को भारत से भगाना था। आरंभ से ही उपनिवेशवादियों को निकाल बाहर करने के प्रयत्न शुरू हो गए थे। ऐसे संघर्षो का एक लम्बा इतिहास रहा है।
''अवध के नवाब वजीर–अली का विद्रोह, सम्भलपुर का विद्रोह, (1839–62), बुंदेलखण्ड में मधुकर शाह बुंदेला का नेत्तृत्व और भूमिया आंदोलन (1842) और आंध्र प्रदेश में नरसिंह रेड्डी का विद्रोह(1846–47)। ये सभी विद्रोह छोटी–छोटी बातों को लेकर थे तथा स्थानीय स्तर पर असंगठित और अलग–अलग थे।"[1]
1857 ई. का विद्रोह एक ऐसा ऐतिहासिक सशस्त्रा विद्रोह रहा जो असफल जरूर हुआ किन्तु इंग्लैड की सरकार को हिला दिया। 1857 ई. की सारी घटनाओं का विस्तार से विश्लेषण देकर मार्क्स इस निष्कर्ष पहुँच "क्रमशः और दूसरे तथ्य जिसे वह सैनिक विद्रोह समझना था, वह वास्तव में राष्ट्रीय विद्रोह था।"[2]
कुछ विद्वानों का यह भी मानना है कि भारत में राष्ट्रीय का जन्म अंग्रेजी–शिक्षा के परिणाम नहीं है"।[3]
भारत में राष्ट्रीयता का उद्भव अंग्रेजों के कारण नहीं वरन् उनके विरूद्ध संघर्षो के परिणाण स्वरूप हुआ। इसलिए यह कहा जा सकता हैं कि भारतीय राष्ट्रवाद अंग्रेजों की देन तो न थी परन्तु उसका विकास साम्राज्यवाद–विरोधी–संघर्ष का परिणाम अवश्य था। जो लोग राष्ट्रवाद को अंग्रेजों की दे मानते हैंμ"यह कथन सही नहीं है कि जनतांत्रिाक क्रांति के बीज बोने के लिए किसी देश पर विदेशी प्रमुख होना जरूरी है।"[4]
भारत में अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य राष्ट्रीय–चेतना का प्रसार करना नहीं था। हिंदुस्तान में आजादी की लड़ाई शुरू हुई, वहाँ की सामाजिक परिस्थितियों से साम्राज्यवादी–शोषण से, वहाँ की आर्थिक, राजनीतिक शक्तियों से शिक्षा चाहे अंग्रेजी में दी जाती या हिंदी में राष्ट्रीयता का विकास होना ही था। रजनी पामदत्त का कहना हैं "हिन्दूस्तान के पूंजीवादी दुनिया से बेखबर रहकर चटसार में वेद छोड़कर और कुछ न पढ़ते तो भी वे वेदो से अपनी लड़ाई के लिए नए सिद्धांत और नए नारे सीख ही लेते।"[5]
जब मैकाले ने अपनी अंग्रेजी शिक्षा का चलन किया तो उसका उद्देश्य राष्ट्रीय चेतना को जागृत करना नहीं था बल्कि जड़ से भारतीय सभ्यता, भारतीय संस्कृति का नाश करना था। उसका उद्देश्य था भारतीय संस्कृति, सभ्यता को नष्ट करना। अब तक साम्राज्यवाद ने यही कार्य किया है जहाँ भी बन पड़ा। वहाँ की सभ्यता, भाषा को नष्ट किया। साम्राज्यवाद से जहाँ बन पड़ा, उसने न केवल भाषाओं का, वरन् उन्हें बोलने वाली जातियों का भी सर्वनाश किया। "अमरीकी महाद्वीपों में अज्तेक और इंका जनो की सभ्यताएँ अत्यन्त विकसित थी अब वहाँ उनके ध्वंसाशेष ही रह गए है। रेड इंडियन जनों की भूमि छीन ली। अमरीकी विश्वविद्यालयों में उनकी भाषाएँ शिक्षा का माध्यम नहीं है। अमरीका नीग्रो अंग्रेजी बोलते है, उनके पुरखे कौन–सी भाषा बोलते है, उन्हें नही मालूम"[6]
भारत में राष्ट्रीयता का जन्म अन्य कारणों से भी हुआ। 19वीं सदी में जनतंत्रा के आंदोलन को प्रेरणा दी अमरीकी स्वाधीनता की घोषण ने और उससे भी ज्यादा फ्रांस की महान राज्य क्रांति ने जिससे कहा गया कि सब मनुष्य स्वाधीन

है, सब समान है और सब मनुष्य भाई है। बीसवीं सदी में यही काम 1905 और 1917 की रूसी क्रांतियों ने भी किया। उन्होनें एशिया की जनता में आजादी की लहर दौड़ दी।
भारतीय समाज में अनेक प्रकार की रूढ़ियों अंधविश्वास तथा सामाजिक कुरीतियाँ प्रचलित थी। जाति प्रथा, छुआछुत के साथ–साथ स्त्रियों की दशा बड़ी दयनीय थी। 19वीं सदी में मध्य वर्ग के शिक्षित लोगों का इन कुरीतियों की ओर ध्यान गया, और इनके विरूद्ध आवाज उठाई। इन राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक कारणों के अतिरिक्त यातायात के साधनों एवं मुद्रणयंत्रों का विस्तार विशेष उल्लेखनीय है। ब्रिटिश सरकार ने अपने हितो की पूर्ति के लिए भारत में यातायात के साधनो का विकास किया। "अंग्रेजी राज ने हिंदुस्तान में राजनीतिक एकता की दुनिया के प्यापार से हिदुंस्तान का संबंध स्थापित किया और नए ढंग से यातायात के साधनों खासतौर रेल तार की व्यवस्था की। जिसके फलस्वरूप आधुनिक उद्योग–धंधो का आरंभ हुआ और उनको के लिए लोगो को वैज्ञानिक प्रबंध संबधी शिक्षा दी गई।"[7]
19वीं सदी के भारत में राष्ट्रीयता की भावना के लिए। इन्हीं परिस्थितियों की आवश्यकता थी। 19वीं सदी में भारत में जहाँ सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आंदोलनो के द्वारा राष्ट्रीयता की भावना को बल मिल रहा था। वहीं हिंदी साहित्यकारों, लेखकों, कवियों द्वारा भी राष्ट्रीयता की भावना को बढ़ावा दिया जा रहा था। भारतेन्दु और उनके सहयोगियों ने रीतिकालीन रूढ़ काव्य–परम्परा से हटकर आधुनिक हिंदी कविता को जिन नवीन प्रवृतियों की ओर मोड़ा, उनमें राष्ट्रीयता अथवा देशभक्ति का स्वर सर्वप्रमुख और सर्वोच्च था। इस युग में भारत के गौरवपूर्ण अतीत की ओर भारतीय जनता का ध्यान आकृष्ट किया, उनमें स्वाभिमान और आत्म गौरव की भावना को जागृत करने का महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा था।

"जहँ शाक्य भये हरिश्चन्द्र नहुष भयाति
जहँ राम युधिष्ठिर वासुदेव सर्भाती
जहँ भीम करन अर्जुन की छटा दिखाती
तहँ रही मूढ़ता कलह अविधा राती''[8]

राष्ट्र के प्रति प्रेम और स्वतंत्राता की तीव्र इच्छा जहाँ भारतेन्दु और द्विवेदी युग में नजर आती है वहीं छायावाद भी इसका अपवाद नही। छायावाद में भी राष्ट्रभक्ति, मुक्ति की आकांक्षा, साम्राज्यवादी प्रतिरोध नजर आता है। ''छायावादी साहित्य की अतंश्चेतना की समीक्षा सांस्कृतिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में की है तथा इस सत्य की प्रतिष्ठा की है कि छायावादी कविता प्रभाव तथा प्रेरणा के साथ ही ऐतिहासिक क्षण की उपज थी, सांस्कृतिक नवजागरण के मानवीय, मूल्यों में एवं वैचारिक आदर्शो से प्रभावित छायावादी कवियों में आदान–प्रदान की स्पष्ट प्रवृत्ति थी।"[9]
छायावादी कविता दो महायुद्धों के बीच की कविता है तथा उस समय भारतीय स्वतंत्राता आंदोलन अपने चरम पर था। इसलिए राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण होकर काल रचना करना इन कवियों के लिए सहज अनिवार्य था। 'चन्द्रगुप्त' नाटक में प्रसाद ने विदेशी पात्राों 'कार्नेलिया' तथा 'सिकन्दर' के मुख से भारत की स्तुति करायी है। 'कार्नेलिया' भारत की नैसर्गिक विभूति से अत्यंत प्रभावित है। इसलिए वह यह गीत गाती हैμ

"अरूण यह मधुमय देश हमाराज्ञ।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।।
सरल तामरस गर्भ विभा पर नाच रही तक्शिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर, मंगल कुंकुम सारा।।

निराला अंग्रेजो के प्रति आक्रोश व्यक्त करते है। साथ ही उन लोगों के प्रति जो अंग्रेजों के साथ उठते बैठते है। जो अंग्रेजो के कार्य में उनका साथ देते हैं। वह लिखते हैμ

"चूम चरण मत चोरों के तू
गले लिपट मत गोरो के तू
झटक–पटक झंझट को झटपट झोंक चाड़ में मान"[11]

नवजागरण के दौर में पूरा देश अज्ञान और जड़ता को त्यागकर स्वाधीनता के स्वप्न देख रहा था। देश में नवीन उत्साह, उमंग, आशा और उल्लास का वातावरण छाया हुआ था। छायावाद में जहाँ निराला, प्रसाद, पंत राष्ट्रीयता के रंग हुए थे वहीं महादेवी वर्मा का काव्य भी राष्ट्रीयता, देश–भक्ति की भावना से परिपूर्ण था।
सत्याग्रह की भावभूमि से संबद्ध छायावादी कविता ने उस युग का सत्य पूरी तरह अंर्तध्वनित होता दिखाई देता है। "उसका रूप–काल से कालातीत, अज्ञात से ज्ञात, अविधा से विद्या, मोह से निज स्वरूप से लय होने, असत्य से सत्य, तमस से ज्योति, गुलामी से आजादी, अंग्रेजी राज्य सेहिन्दुस्तानी राज्य, लघु से महत्व की ओर उन्मुख है। क्षितिज के उस पार कुछ पार कुछ ऐसा है जो विद्युत चुंबक की तरह यों खिंचता है कि निराला की मांसपेशिंया और महादेवी के कोमल भावतंतु एक सरीखे चरमराते है।"[12]
महादेवी वर्मा का आगमन जब हिंदी साहित्य के क्षेत्रा में होता है तब भारत स्वतंत्राता के लिए संघर्ष कर रहा था। भारतीय समाज स्वतंत्रा होने के लिए छटपटा रहा था। भारतीय स्वतंत्राता आंदोलन अपने चरम पर था। उस समय हिंदी साहित्य के लेखक भी स्वतंत्राता आंदोलन में अपनी अहम भूमिका निभा रहे थे। महादेवी वर्मा के काल का भी स्वधीनता आंदोलन से प्रभावित होना जायज था। राम विलास शर्मा जी कहते है.
"महादेवी जी और उनकी कविता का परिचय में नीर भरी दुख की बदली या एकाकिनी बरसात कहकर नहीं दिया जा सकता।"[13]
उन्हीं के शब्दो में उनका परिचय देना हो तो मैं यह पंक्ति उद्धत करूँगा.

"रात के उर में दिवस की चाह काशर दूँ"[14]

19वीं सदी के पुर्वाद्ध का भारत पराधीन है। महादेवी अपनी इन पंक्तियों के माध्यम से देशवासियों में स्वतंत्राता की चाह जगाती है। निराशावाद की अंधेरी रात में जीवन–प्रभात की चाह महादेवी वर्मा की रचनाओं में साफ नजर आती है। महादेवी वर्मा की हम 'नीहर' की कविताओं पर नजर डाले तो उनकी अधिकतर कविता प्रकृति, प्रणय और वेदना पर आधारित है। परन्तु 'रश्मि' में महादेवी वर्मा अपनी रचनाओं द्वारा भारतीय जनता के शोषण, उनकी समाजिक आर्थिक स्थिति पर चिंतित है। भारत माँ की व्यथा, उसकी दयनीय स्थिति उनसे देखी नहीं जाती। वह लिखती हैंμ

"कह दे माँ क्या अब देखूँ
देखूँ खिलती कलियाँ या
प्यासे सूखे अधरों को।"[15]

महादेवी वर्मा के साहित्य में स्वाभिमान एवं देशानुराग कूट–कूट कर भरा पड़ा है। वह भारतीय जनता को ब्रिटिश सरकार से संघर्ष करते रहने के लिए प्रेरित करती है। हमें स्वतंत्रा होना चाहिए। अभी हमें स्वतंत्राता नहीं मिली है। भारतवासियों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

"रात के पथहीन तम में मधुर जिसके श्वास
फैले भरते लघु–कणों में भी असीम सुवास
कंटको की सेज जिसकी आंसुओं का ताज
सुभग! हँस उठे उस प्रफुल्ल गुलाब ही सा आज,
बीती रजनी जारे जाग।"[16]

छायावादी चेतना का पूरा निर्धारण
नवजाग–युग की मानसिकता करती है। छायावादी चेतना पराधीनता से मुक्ति चाहती है। यही भाव महादेवी वर्मा के काल में नजर आता है।

"झंझा है दिग्भ्रांत रात की मूर्छा गहरी
आज पुजारी बने, ज्योति का यह लघु प्रहरी
जब तक लौटे दिन की हलचल
तब तक यह जागेगा प्रतिपल
रेखाओं में भर आभा–पल
दूत–साँझ का इसे प्रभाती तक चलने दो''[17]

अमृत राय जी महादेवी को एकाकिनी बरसात कहते है। पृथक आलोचकों के अनुसार महादेवी वर्मा जो अपने काव्य में रोती रहती है उसका मुख्य कारण उनका असफल वैवाहिक जीवन रहा है। डॉ. नगेन्द्र लिखते हैंμ"सामाजिक परिस्थितियों के अनुरोध से जीवन से रस और मांस न ग्रहण कर सकने के कारण एक वो वांछित शक्ति का संचय नहीं कर पायी, दूसरे अर्न्तमुखी हो गयी। इस प्रकार उनके आविर्भाव में मानसिक दमन और अतृप्तियों का बहुत बड़ा भोग है, इनको कैसे भुलाया जा सकता है।"[18]
आलोचकों ने महादेवी वर्मा के साहित्य में पीड़ा, वेदना ही क्यों देखी? और उस पर रहस्यवाद, अध्यात्मवाद का रंग चढ़ा दिया गया। तत्कालीन समय में स्त्राी स्वतंत्राता सिर्फ नाम के लिए रही। आज भी उसके पैरों में सामंती समाज की सामंती संस्कारों की बेड़ियो पड़ी हुई है। वर्तमान समय में जब स्त्रियों की स्थिति दयनीय है, तो स्वतंत्रातापूर्वक महादेवी वर्मा के समय में क्या स्थिति रही होगी, इसका अनुमान लगाना थोड़ा कठिन होगा।

रामविलास शर्मा लिखते हैं– "नारी की दासता और परवशता के सहारे
जिस अध्यात्मवाद की रचना हुई, वह ढह पड़े अगर नारी इन सामन्ती बंधनों को तोड़ने के लिए कटिबद्ध हो जाए।"[19]
भारतीय समाज पितृसत्तात्मक है। यहाँ स्त्रियों की स्वाधीनता पुरुषों को रास नहीं आती। पुरुष स्त्राी को सदैव अपने अनुसार, अपने अधीन रखना चाहता है। जब कोई समाज में कोई स्त्राी स्वतंत्रा नहीं रह सकती तब पुरुष समाज यह कैसे बर्दाश्त कर सकता है कि एक स्त्राी अपने साहित्य में स्वतंत्रा होकर विचरण करें। महादेवी वर्मा के काव्य में छटपटाहट है। डॉ. रामविलास शर्मा जी लिखते हैμ"यही कारण कि इस पीड़ावाद के खिलाफ जहाँ किसी नारी की रचनाओं में प्रेम, सौन्दर्य और विद्रोह के तत्व उभर जाते है। वे एक बार उन्हें देखकर भी नहीं देखतें।"[20]
आलोचको को फिर से महादेवी वर्मा के काल को परखना चाहिए, उसकी जाँच पड़ताल होनी चाहिए। वस्तुतः महादेवी वर्मा के काल को केवल 'मैं नीर भरी दुःख की बदली' या 'एकाकिनी बरसात' के रूप में नहीं देखना चाहिए। महादेवी वर्मा का काव्य साम्राज्यवाद–विरोधी है। उनके गद्य ग्रंथ दोनों में ब्रिटिश सरकार के प्रति विद्रोही तेवर है। वह अपने रचना संसार के माध्यम से ब्रिटिश सरकार के प्रति भारतवासियों को संघर्ष करने की प्रेरणा देती है।

संदर्भ
1. शर्मा, भगवती प्रसाद : भारतीय नवजागरण और प्रताप नरायण मिश्र, पृष्ठ

2. दत्त, रजनी पाम : आज का भारत, पृष्ठ 90
3. देसाई, ए.आर. : भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठ भूमि, पृष्ठ 127
4. दत्त, रजनी पाम : आज का भारत पृष्ठ 280
5. दत्त, रजनी पाम : आज का भारत, पृष्ठ 284
6. शर्मा, रामविलास : निराला की साहित्य साधना, भाग – 2, पृष्ठ–16
7. दत्त, रजनी पानः आज का भारत, पृष्ठ 286
8. सिंह, ओम प्रकाश : भारतेंदु ग्रंथावली, भाग–4, पृष्ठ 78
9. राय, महेन्द्रनाथः छायावाद और नवजागरण, भूमिका
10. प्रसाद, जयशंकरः चन्द्रगुप्त, पृष्ठ 85
11. शर्मा, रामविलास : निराला की साहित्य–साधना भाग –2, पृष्ठ 149
12. त्रिपाठी, अनिल : नई कविता, पृष्ठ 69
13. शर्मा, विजयमोहन : परम्परा का मूल्यांकन, पृष्ठ 93
14. जैन, निर्मला : महादेवी साहित्य भाग–1 पृष्ठ 264
15. जैन, निर्मला : महादेवी साहित्य भाग–1 पृष्ठ 264
16. जैनः निर्मलाः महादेवी समग्र(भाग–1), पृष्ठ 133
17. जैन, निर्मलाः महादेवी समग्र (भाग–1), पृष्ठ 133
18. जैन, निर्मलाः महादेवी समग्र (भाग–), पृष्ठ 335
19. शर्मा, विजयमोहनः परम्परा का मूल्यांकन, पृष्ठ 93
20. शर्मा, विजयमोहन : परम्परा का मूल्यांकन, पृष्ठ 93
21. शर्मा, विजयमोहन : परम्परा का मूल्यांकन, पृष्ठ 95